L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART III
PAPER - IV
TOPIC - STRUCTURALISM

Dr. Pramod Kumar Singh,
Assistant professor.
Guest Teacher.
V.S.J. College Rajnagar.
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsdbg2018@gmail.com

Structuralism (संरचनावाद)

संरचनावाद की संस्थापना विलियम वुण्ट (Wilhelem Wundt) के शिष्य ई० बी० टिचेनर (E.B. Titchener) द्वारा अमेरिका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय (Cornell University) में की गई। अतः संरचनावाद की संस्थापना में वुण्ट को अग्रगामी (forerunner) माना जाता है। क्योंकि टिचेनर सबसे तरह मूलतः वुण्ट के विचारों को ही थोड़ा परिवर्तित एवं परिवर्द्धित कर प्रस्तुत किया है।

ई० बी० टिचेनर (E.B. Titchener (1867 - 1927) का जन्म इंग्लैंड के दक्षिण में चिचेस्टर में 1867 (Chichester) में हुआ था, उनके परिवार में प्रतिष्ठित धन की कमी थी, छात्रवृत्ति (scholarship) के सहारे उनका नामांकन माल्वर्न कॉलेज में हो गया और उसके बाद वे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय (Oxford University) से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इस तरह से एक शरीर क्रिया-विज्ञानी (Physiologist) के रूप में उनकी प्रशिक्षण हुई। परन्तु वे कहते थे कि इस प्रशिक्षण से संतुष्ट नहीं थे, इसलिए वे उस समय के मशहूर मनोवैज्ञानिक विलियम वुण्ट से शिक्षा प्राप्त करने के लिए जर्मनी जाने का मन लिया, वे जर्मनी पहुँच गए जहाँ उन्होंने वुण्ट के साथ दो वर्षों तक अर्थात् 1990 से 1892 तक प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा 1892 में वुण्ट के निर्देशन में पी० एच० डी० (Ph.D) की उपाधि प्राप्त की, इन दो वर्षों की अवधि में यद्यपि उनकी [illegible] वुण्ट से कभी घनिष्ठ

नहीं हुई किन्तु वुण्ट के मनोविज्ञान के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा।
लिपजिंग विश्वविद्यालय से ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय (Oxford University) लौटने पर वे जीव विज्ञान के व्याख्याता (Lecturer) के पद पर नियुक्त हुए। टिचेनर ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में ही रहकर मनोविज्ञान का व्यापक विकास एवं प्रसार करना चाहते थे, परन्तु अंग्रेजों की जीवविज्ञान के कारण तथा मनोविज्ञान उपयोगी को मान्य नहीं था, इसलिए वे अमेरिका चले गए और वहाँ उस समय नये-नये स्थापित कॉर्नेल विश्वविद्यालय में रहकर मनोविज्ञान का गहन अध्ययन किया - वे इस विश्वविद्यालय में करीब 35 वर्षों तक रहे। यहाँ वे लोगों को मनोविज्ञान पढ़ाते तथा एक नये पद्धति जैसे इंजिन द्वारा स्थापित प्रयोगशाला में वे तरह तरह के प्रयोगात्मक अध्ययन एवं प्रयोग किये, कॉर्नेल विश्वविद्यालय के 35 वर्षों के इस महत्वपूर्ण जीवनवृत्ति (career) में वे एक विशेष सम्प्रदाय (System) की स्थापना की, जिसे संरचनावाद की संज्ञा दी गयी - कई किताबें, एवं शोध-पत्रों (Research articles) भी वे लिखे गए। इन 35 वर्षों में उन्होंने मनोविज्ञान में 50 पी० एच० डी० शोध-प्रबन्धों (PhD ~~dissertation~~ Dissertations) किये, कॉर्नेल विश्वविद्यालय का पथप्रदर्शन किया, टिचेनर द्वारा लिखित कुछ महत्वपूर्ण पाठ्य पुस्तकें थे, (An outline of Psychology 1896) The Primer of Psychology) 1898 प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के सम्पादक (editor) भी रह चुके थे। 1904 में टिचेनर ने प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के समूह की एक सभा आयोजित किये।

Scanned with CamScanner

(iii)

की उपरोक्त प्रतिबद्धि विभिन्न प्रयोगशालाओं में सम्पन्न हुआ करती है। ई० जी० बोरिंग (E.G. Boring) जो टिचनर के शिष्य तथा मनोविज्ञान के एक प्रसिद्ध इतिहासकार रहे हैं उस समूह के एक सक्रिय सदस्य थे।

टिचनर एक ऐसे अंग्रेज थे, जो अमेरिका में रहते हुए भी ब्रिटिश नागरिकता का त्याग कर नहीं किये, इसके बावजूद इतिहासकारों ने उन पर इस नियम की छाप अधिक पायी है कि वे अमेरिकन ग्राई से प्रभावित नहीं हुए और अपने गुरु वुण्ट से सीखे गये। मनोविज्ञान का विस्तार किया, उसका प्रचार करते रहे। इन प्रयोगशालाओं को उन्हें यदि वुण्ट से भी अधिक वुण्टियन माना जाए, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। 1927 में मस्तिष्क के ट्यूमर के कारण उनकी मृत्यु हो गयी, जिससे अमेरिकन मनोवैज्ञानिक जगत को गहरा धक्का लगा, और थोड़े समय के लिए यह सम्प्रदाय ढह गया।

मनोविज्ञान का विषय वस्तु (Subject matter of Psychology) टिचनर ने यह स्पष्ट किया कि सभी विज्ञान का आरम्भ बिन्दु अनुभूति ही होती है। वे वुण्ट के इस विचार से सहमत नहीं थे, कि मनोविज्ञान तात्कालिक अनुभूति का अध्ययन करता है तथा भौतिकी मध्यवर्ती अनुभूति का वास्तव में वे अनुभूति के इस विभाजन से सहमत नहीं थे। टिचनर के लिए सभी अनुभूतियाँ तात्कालिक थी।

(iv)

टिचनर ने मन (mind) तथा चेतना (consciousness) के बीच का अन्तर किया। उनके अनुसार, जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति की अनुभूतियों के कुल योग को मन कहा गया है। जबकि किसी एक समय में व्यक्ति की अनुभूतियों के कुल योग को चेतना (consciousness) कहा जाता है।

टिचनर के अनुसार मनोविज्ञान के तीन समस्याएं हैं क्या, कैसे, तथा क्यों। क्या से तात्पर्य मानसिक अनुभूति को उनके मौलिक तत्वों में विश्लेषण से था, कैसे से तात्पर्य यह खोज करना था कि मानसिक अनुभूति के किस तरह से संयोजित होती है, तथा वे कौन-कौन से नियम हैं जिनसे संयोजन निर्धारित होता है। क्यों से तात्पर्य उन तत्वों से होता है, जिसके सहारे मानसिक घटनाएं अपनी दैहिक अवस्थाओं अर्थात मस्तिष्क एवं तंत्रिका तंत्र से सहसम्बन्धित होते हैं।

Dr. Pramod kumar sahu,
Date - 09/08/2020
Sub - Psychology